ॐ

सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

तस्स

पढमखंडे जीवट्ठाणे

अंतराणुगमो

अंताइमज्झहीणं दसद्धसयचावदीहिरं पढमजिणं ।
वोच्छं णमिऊणंतरमणंतरुत्तुंगसण्हमइदुग्गेज्झं ॥

अंतराणुगमेण दुविहो णिद्देसो, ओघेण आदेसेण य[1] ॥१॥

णाम-ट्ठवणा-दव्व-खेत्त-काल-भावभेदेण छव्विहमंतरं । तत्थ णामंतरं अंतरसद्दो[2]

....

आदि, मध्य और अन्तसे रहित अतएव अनन्तर, अर्थात् अनन्तज्ञानस्वरूप, और दशशतके आधे अर्थात् पांच सौ धनुष उंचाईवाले अतएव उत्तुंग, तथापि ज्ञान की अपेक्षा सूक्ष्म, अतएव अतिदुर्ग्राह्य, ऐसे प्रथम जिन श्री वृषभनाथको नमस्कार करके अंतरानुयोगद्वारको कहता हूं, जिसमें अनन्तर अर्थात् अन्तररहित गुणस्थानों व मार्गणास्थानोंका भी वर्णन है, तथा जिसमें उत्तुंग अर्थात् दीर्घकालात्मक व सूक्ष्म अर्थात् अत्यल्पकालात्मक अन्तरोंका भी कथन है, अतएव जो मतिज्ञान द्वारा दुर्ग्राह्य है ।

अन्तरानुगमसे निर्देश दो प्रकार का है, ओघनिर्देश और आदेशनिर्देश ॥१॥

नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके भेदसे अन्तर छह प्रकारका होता है । उनमें बाह्य अर्थोंको छोडकर अपने आपमें अर्थात् स्ववाचकतामें प्रवृत्त होनेवाला 'अन्तर' यह शब्द

....

[1] विवक्षितस्य गुणस्य गुणान्तरसंक्रमे सति पुनस्तत्प्राप्तेः प्राङ्मध्यमंतरम् । तत् द्विविधम्, सामान्येन विशेषेण च । स.सि. १,८. [2] मु. प्रतौ तत्थ णामंतरसद्दो इति पाठः

बज्झत्थे मोत्तूण अप्पाणम्हि पयट्टो । ट्ठवणंतरं दुविहं सब्भावासब्भावभेएण । भरह-बाहुबलीणमंतरमुव्वेल्लंतो णदो सब्भावट्ठवणंतरं । अंतरमिदि बुद्धीए संकप्पिय दंड-कंड-कोदंडादओ असब्भावट्ठवणंतरं । दव्वंतरं दुविहं आगम-णोआगमभेएण । अंतरपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो अंतरदव्वागमो वा आगमदव्वंतरं । णोआगमदव्वतरंजाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेएण तिविहं । आधारे आधेयोवयारेण लद्धंतरसण्णं जाणुगसरीरं भविय-वट्टमाण-समुज्झादभेएण तिविहं । कधं भवियस्स अणाहारदाए ट्ठिदस्स अंतरववएसो? ण एस दोसो, कूरपज्जयाणाहारेसु वि तंदुलेसु एत्थ कूरववएसुवलंभा । कधं भूदे एसो ववहारो ? ण, रज्जपज्जायअणाहारे वि पुरिसे राओ आगच्छदि त्ति ववहारुवलंभा । भवियणोआगमदव्वंतरं भविस्सकाले अंतरपाहुड्जाणओ संपहि संते वि उवजोए अंतरपाहुडअवगमरहिओ । तव्वदिरित्तदव्वंतरं तिविहं सचित्ताचित्त-मिस्स-

....

नाम-निक्षेप है । स्थापना अन्तर सद्भाव और असद्भावके भेदसे दो प्रकारका है । भरत और बाहुबलिके बीच उमडता हुआ नद सद्भावस्थापना अन्तर है । अन्तर इस प्रकारकी बुद्धिसे संकल्प करके दंड, बाण, धनुष्य आदिक असद्भावस्थापना अन्तर है, अर्थात् दंड बाणादि न होते हुए भी तत्प्रमाण क्षेत्रवर्ती अन्तरकी, यह अंतर इतने धनुष है ऐसी जो कल्पना कर लेते हैं, उसे असद्भावस्थापना अन्तर कहते हैं ।

द्रव्यान्तर आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है । अन्तरविषयक प्राभृतके ज्ञायक तथा वर्तमानमें अनुपयुक्त पुरुषको अगमद्रव्यान्तर कहते हैं । अथवा, अन्तर के प्रतिपादक द्रव्यरूप आगमको आगमद्रव्यान्तर कहते हैं । नोआगमद्रव्यान्तर, ज्ञायकशरीर, भव्य और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे तीन प्रकारका है । आधारमें उपचारसे प्राप्त हुई है अन्तरसंज्ञा जिसको ऐसा ज्ञायकशरीर भव्य, वर्तमान और समुत्त्यक्तके भेदसे तीन प्रकारका है ।

शंका - अनाधारतासे स्थित, अर्थात् वर्तमानमें जो अन्तरागमका आधार नहीं है ऐसे भावी शरीरके 'अन्तर' इस संज्ञाका व्यवहार कैसे हो सकता है ?

समाधान - यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, कूर (भात) रुप पर्यायके आधार न होने पर भी तंदुलोंमें यहां, अर्थात् व्यवहारमें, कूर संज्ञा पाई जाती है ।

शंका- भूत ज्ञायकशरीरके यह अन्तरको व्यवहार कैसे बनेगा ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, राज्यपर्यायके नहीं धारण करनेवाले पुरुषोंमें भी 'राजा आता है' इस प्रकारका व्यवहार पाया जाता है ।

भविष्यकालमें जो अन्तरशास्त्रका ज्ञायक होगा, परंतु वर्तमानमें अन्य पदार्थके उपयोगके होते हुए भी अन्तरशास्त्रके ज्ञानसे रहित है, ऐसे पुरुषको भव्य नोआगमद्रव्यान्तर कहते हैं ।

भेएण। तत्थ सचित्तंतरं उसहसंभवाणं मज्झे ट्ठिओ अजिओ[1]। अचित्ततव्वदिरित्तदव्वंतरं णाम घणोअहि[2]तणुवादाणं मज्झे ट्ठिओ घणाणिलो। मिस्संतरं जहा उज्जंतसत्तुंजयाणं विच्चालट्ठिदगामणगराइं। खेत्त-कालंतराणि दव्वंतरे पविट्ठाणि, छदव्ववदिरित्तखेत्त-कालाणमभावा। भावंतरं दुविहं आगम-णोआमभेएण। अंतरपाहुडजाणओ उवजुत्तो भावागमो वा आगमभावंतरं। णोआगमभावंतरं णाम ओदइयादी पंच भावा दोण्हं भावाणमंतरे ट्ठिदा।

एत्थ केण अंतरेण पयदं ? णोआगमदो भावंतरेण। तत्थ वि अजीवभावंतरं मोत्तूण जीवभावंतरे पयदं, अजीवभावंतरेण इह पओजणाभावा। अंतरमुच्छेदो विरहो परिणामंतरगमणं णत्थित्तगमणं अण्णभावव्ववहाणमिदि एयट्ठो। एदस्स अंतरस्स अणुगमो अंतराणुगमो। तेण अंतराणुगमेण दुविहो णिद्देसो दव्वट्ठिय-पज्जवट्ठियणयावलंबणेण। तिविहो णिद्देसो किण्ण[3] होज्ज ? ण, तइज्जस्स अभावा। तं पि कधं णव्वदे ? संगहासंगहवदिरित्ततव्विसयाणुवलंभा।

....

तद्व्यतिरिक्त द्रव्यान्तर सचित्त, अचित्त और मिश्रके भेदसे तीन प्रकारका है। उनमेंसे वृषभजिन और संभवजिनके मध्यमें स्थित अजितजिन सचित्त तद्व्यतिरिक्त द्रव्यान्तरके उदाहरण हैं। घनोदधि और तनुवातके मध्यमें स्थित घनवात अचित्त तद्व्यतिरिक्त द्रव्यान्तर है। ऊर्जयन्त और शत्रुञ्जयके मध्यमें स्थित ग्राम नगरादिक मिश्र तद्व्यतिरिक्त द्रव्यान्तर है। क्षेत्रान्तर और कालान्तर, ये दोनों ही द्रव्यान्तरमें प्रविष्ट हो जाते हैं, क्योंकि, छह द्रव्योंसे व्यतिरिक्त क्षेत्र और कालका अभाव है।

भावान्तर आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है। अन्तरशास्त्रके ज्ञायक और उपयुक्त पुरुषको आगमभावान्तर कहते हैं, अथवा भावरूप अन्तर आगमको आगमभावान्तर कहते हैं। औदयिक आदि पांच भावोंमेंसे किन्हीं दो भावोंके मध्यमें स्थित विवक्षित भावको नोआगमभावान्तर कहते हैं।

शंका- यहां पर किस प्रकारके अन्तरसे प्रयोजन है ?

समाधान - नोआगमभावान्तरसे प्रयोजन है। उसमें भी अजीव भावान्तरको छोडकर जीवभावान्तर प्रकृत है, क्योंकि, यहां पर अजीवभावान्तरसे कोई प्रयोजन नहीं है।

अन्तर, उच्छेद, विरह, परिणामान्तरगमन, नास्तित्वगमन और अन्यभावव्यवधान, ये सब एकार्थवाची नाम हैं। इस प्रकारके अन्तरके अनुगमको अन्तरानुगम कहते हैं। उस अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है, क्योंकि, वह निर्देश द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नयका अवलंबन करनेवाला है।

शंका - तीन प्रकारका निर्देश क्यों नहीं होता है ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, तीसरे प्रकारका कोई नय ही नहीं है।

शंका - यह भी कैसे जाना ?

....

[1] प्रतिषु 'आजीआ' मप्रतौ 'अजीओ' इति पाठ :।

[2] प्रतिषु 'पुणोअहि' इति पाठः।

[3] प्रतिषु 'किण्ह' इति पाठः।

एवं मणम्मि काऊण ओघेणादेसेण येत्ति[1] उत्तं । एक्केण णिद्देसेण पज्जत्तमिदि चे ण, एक्केण दुणयावलंबिजीवाणमुवयारकरणे उवायाभावा ।

ओघेण मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥२ ॥

'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायसंभालणट्ठं[2] ओघेणोत्ति उत्तं सेसगुणट्ठाणउदासट्ठो मिच्छादिट्ठिणिद्देसो । केवचिरं कालादो इदि पुच्छा एदस्स पमाणत्तपदुप्पायणफला । णाणाजीवमिदि बहुस्सु एयवयणणिद्देसो कधं घडदे ? णाणाजीवट्ठियसामण्णविवक्खाए बहूणं पि एगत्तविरोहाभावा । णत्थि अंतरं मिच्छत्तपज्जयपरिणदजीवाणं तिसु वि कालेसु वोच्छेदो विरहो अभावो णत्थि त्ति उत्तं होदि । अंतरस्स पडिसेहे कदे सो पडिसेहो तुच्छो ण होदि त्ति जाणावणट्ठं णिरंतरग्गहणं, विहिरूवेण

....

समाधान - क्योंकि, संग्रह (सामान्य) और असंग्रह (विशेष) को छोडकरके किसी अन्य नयका विषयभूत कोई पदार्थ नहीं पाया जाता है ।

इस उक्त प्रकारके शंका-समाधानको मनमें धारण करके सूत्रकारने 'ओघसे' और आदेशसे' ऐसा पद कहा है ।

शंका- एक ही निर्देश करना पर्याप्त था ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, एक निर्देशसे दोनों नयोंके अवलम्बन करनेवाले जीवोंके उपकार करनेमे उपायका अभाव है ।

ओघसे मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरंतर है ॥२॥

'जैसा उद्देश होता है, वैसा निर्देश होता है' इस न्यायके रक्षणार्थ 'ओघसे' यह पद कहा। मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश शेष गुणस्थानोंके प्रतिषेधके लिए है । 'कितने काल होता है ' इस पृच्छाका फल इस सूत्रकी प्रमाणताका प्रतिपादन करना है ।

शंका - 'णाणाजीवं' इस प्रकारका यह एकवचनका निर्देश बहुतसे जीवोंमें कैसे घटित होता है?

समाधान - नाना जीवोंमें स्थित सामान्यकी विवक्षासे बहुतोंके लिए भी एकवचनके प्रयोगमें विरोध नहीं आता ।

'अन्तर नहीं है' अर्थात् मिथ्यात्वपर्यायसे परिणत जीवोंका तीनों कालोंमें व्युच्छेद, विरह या अभाव नहीं होता है, यह अर्थ कहा गया समझना चाहिए । अन्तरके प्रतिषेध करने पर वह प्रतिषेध तुच्छ अभावरूप नहीं होता है, किन्तु भावान्तरभावरूप होता है, इस बातके जतलानेके

....

[1] सामान्येन तावत् मिथ्यादृष्टेर्नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् । स, सि. २,८

[2] मु. प्रतौ णायसंभालट्ठं इति पाठ : ।

पडिसेहादो वदिरित्तेण मिच्छादिट्ठिणो सव्वकालमच्छंति त्ति उत्तं होदि । अधवा पज्जवट्ठियणयावलंबियजीवाणुग्गहट्ठं णत्थि अंतरमिदि पडिसेहवयणं, । एसो अत्थो उवरि सव्वत्थ वत्तव्वो ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्तं[1] ॥ ३ ॥

तं जधा–एक्को मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छत्त-सम्मत्त-संजमासंजम-संजमेसु बहुसो परियट्टिदो, परिणामपच्चएण सम्मत्तं गदो, सव्वलहुमंतोमुहुत्तंतं सम्मत्तेण अच्छिय मिच्छत्तं गदो, लद्धमंतोमुहुत्तं सव्वजहण्णं मिच्छत्तंतरं । एत्थ चोदगो भणदि–जं पढमिल्लं मिच्छत्तं तं पुणो सम्मत्तुत्तरकाले ण होदि, पुव्वकाले वट्टंतस्स उत्तरकाले पउत्तिविरोहा । ण च तं चे उत्तरकाले उप्पज्जइ, उप्पण्णस्स उप्पत्तिविरोहा । तदो अंतिल्लं मिच्छत्तं पढमिल्लं ण[2] होदि त्ति अंतरस्स अभावो चेयेत्ति ? एत्थ परिहारो उच्चदे–सच्चमेवमेदं, जदि सुद्धो पज्जयणओ[3] अवलंबिज्जदि । किंतु णइगमणयमवलंबिय अंतरपरूवणा कीरदे, तस्स सामण्णविसेसुहयविसयत्तादो ।

....

लिए 'निरन्तर' पदका ग्रहण किया है । प्रतिषेधसे व्यतिरिक्त होनेके कारण विधिरूपसे मिथ्यादृष्टि जीव सर्वकाल रहते हैं यह अर्थ कहा गया है । अथवा, पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेवाले जीवोंके अनुग्रहके लिये ' अन्तर नहीं है ' इस प्रकारका प्रतिषेधवचन और द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेवाले जीवोंके अनुग्रह के लिए 'निरन्तर' इस प्रकारका विधिपरक वचन कहा गया है । यह अर्थ आगेके सभी सूत्रोमें भी कहना चाहिए ।

एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है ॥३॥

जैसे-एक मिथ्यादृष्टि जीव, सम्यग्मिथ्यात्व, अविरतसम्यक्त्व, संयमासंयम और संयममें बहुतवार परिवर्तित होता हुआ परिणामोंके निमित्तसे सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ, और वहां पर सर्वलघु अन्तर्मुहूर्तकाल तक सम्यक्त्वके साथ रहकर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ । इस प्रकारसे सर्वजघन्य अन्तर्मुहूर्त प्रमाण मिथ्यात्व गुणस्थानका अन्तर प्राप्त हो गया ।

शंका - यहां पर शंकाकार कहता है कि अन्तर करनेके पूर्व जो पहलेका मिथ्यात्व था, वही पुनः सम्यक्त्वके उत्तरकालमें नहीं होता है; क्योंकि, सम्यक्त्वप्राप्तिके पूर्वकालमें वर्तमान मिथ्यात्वके उत्तरकालमें, अर्थात् सम्यक्त्व छोड़नेके पश्चात्, प्रवृत्ति होनेका विरोध है । तथा, वही पहला मिथ्यात्व उत्तरकालमें उत्पन्न नहीं होता, क्योंकि, उत्पन्न हुई वस्तुके पुनः उत्पन्न होनेका विरोध है । इसलिए सम्यक्त्व छूटनेके पश्चात् होनेवाला अन्तिम अर्थात् दूसरा मिथ्यात्व पहलेका मिथ्यात्व नहीं हो सकता है, इससे अन्तरका अभाव ही सिद्ध होता है?

समाधान -यहां उक्त शंकाका परिहार करते हैं - उक्त कथन सत्य ही है, यदि शुद्ध पर्यायार्थिक नयका अवलंबन किया जाय । किंतु नैगमनयका अवलंबन लेकर अन्तर-

....

[1] एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः । स. सि. 1,8.

[2] मु. प्रतो पढमिल्लमिणं इति पाठः ।

[3] ता. 1.2.3 प्रतिषु पज्जयणयदो इति पाठः ।

तदो ण एस दोसो । तं जहा –पढमंतिममिच्छत्तं पज्जाया अभिण्णा, मिच्छत्तकम्मोदयजादत्तेण अत्तागम[1]– पदत्थाणमसद्दहणेण एगजीवाहारत्तेण भेदाभावा । ण पुव्वुत्तरकालभेएण ताणं भेओ, तधा विवक्खाभावा । तम्हा पुव्वुत्तरद्धासु अच्छिण्णसरूवेण ट्ठिदमिच्छत्तस्स सामण्णावलंबणेण एकट्ठं[2] पत्तस्स सम्मत्तपज्जओ अंतरं होदि । एस अत्थो सव्वत्थ पउज्जिदव्वो ।

उक्कस्सेण बे छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि[3] ॥४॥

एदस्स णिदरिसणं–एक्को तिरिक्खो मणुसो वा लंतय–काविट्ठकप्पवासियदेवेसु चोद्दससागरोवमाउट्ठिदिएसु उप्पण्णो एक्कं[4] सागरोवमं गमिय विदियसागरोवमादिसमए सम्मत्तं पडिवण्णो । तेरससागरोवमाणि तत्थ अच्छिय सम्मत्तेण सह चुदो मणुसो जादो । तत्थ संजमं संजमासंजमं वा अणुपालिय मणुसाउएणूणवावीससागरोवमाउट्ठिदिएसु आरणच्चुददेवेसु उववण्णो । तत्तो चुदो मणुसो जादो । तत्थ संजममणुपालिय उवरिम–

....

प्ररूपणा की जा रही है, क्योंकि, वह नैगमनय सामान्य तथा विशेष, इन दोनोंको विषय करता है, इसलिये यह कोई दोष नहीं है । उसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है-अंतरकालके पहलेका मिथ्यात्व और पीछेका मिथ्यात्व, ये दोनों पर्याय हैं, जो कि अभिन्न हैं, क्योंकि, मिथ्यात्वकर्मके उदयसे उत्पन्न होनेके कारण; आप्त, आगम और पदार्थोंके अश्रद्धानकी अपेक्षा; तथा एक ही जीव द्रव्यके आधार होनेसे उनमें कोई भेद नहीं है । और न पूर्वकाल तथा उत्तरकालके भेदकी अपेक्षा भी उन दोनों पर्यायोंमें भेद है, क्योंकि, इस कालभेदकी यहाँ विवक्षा नहीं की गई है । इसलिए अन्तरके पहले और सामान्य (द्रव्यार्थिकनय) के अवलम्बनसे संग्रहको प्राप्त मिथ्यात्वका सम्यक्त्व पर्याय अन्तर होता है, यह सिद्ध हुआ । यही अर्थ आगे सर्वत्र योजित कर लेना चाहिये ।

मिथ्यात्वका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम दो छियासठ सागरोपम काल है ॥४॥

इसका दृष्टान्त-कोई एक तिर्यंच अथवा मनुष्य चौदह सागरोपम आयुस्थितिवाले लांतव-कापिष्ट कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न हुआ । वहां एक सागरोपम काल बिताकर दूसरे सागरोपमके आदि समयमें सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ । तेरह सागरोपम काल वहां पर रहकर सम्यक्त्वके साथ ही च्युत हुआ और मनुष्य होगया । उस मनुष्यभवमें संयमको, अथवा संयमासंयम को, अनुपालन कर इस मनुष्यभवसम्बन्धी आयुसे कम बाईस सागरोपम, आयुकी स्थितिवाले आरण-अच्युतकल्पके देवोंमें उत्पन्न हुआ । वहांसे च्युत होकर पुनः मनुष्य हुआ । इस मनुष्यभवमें संयमको अनुपालन कर उपरिम

....

[1] ता. ता. २ प्रत्योः अत्थागम इति पाठ : ।

[2] मुं. प्रतौ एक्कत्तं इति पाठ :।

[3] उत्कर्षेण द्वे षट्षष्ठी देशोने सागरोपमाणाम् । स. सि. १८

[4] ता. १ ता. २ प्रत्योः उववण्णो इति पाठः ।

गेवज्जे देवेसु मणुसाउगेणूणएक्कत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु उववण्णो । अंतोमुहुत्तूण-छावट्ठिसागरोवमचरिमसमए परिणामपच्चएण सम्मामिच्छत्तं गदो । तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो सम्मत्तं पडिवज्जिय विस्समिय चुदो मणुसो जादो । तत्थ संजमं संजमासंजमं वा अणुपालिय मणुस्साउएणूणवीससागरोवमाउट्ठिदिएसु वज्जिय पुणो जहाकमेण मणुसाउवेणूणबावीस-चउवीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसुववज्जिय अंतोमुहुत्तूणवेछावट्ठिसागरोवमचरिमसमए मिच्छत्तं गदो । लद्धमंतरं अंतोमुहुत्तूणवेच्छावट्ठिसागरोवमाणि । एसो उप्पत्तिकमो अव्वुप्पण्ण[१] उप्पायणट्ठं उत्तो । परमत्थतो पुण जेण केण वि पयारेण-वेवछाट्ठि[२] पुरेदव्वा ।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठिणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं[३] ॥५॥

तं जहा, सासणसमादिट्ठिस्स ताव उच्चदे-दो जीवमादिं काऊण एगुत्तरकमेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तवियप्पेण उवसमसम्मादिट्ठिणो उवसमसम्मत्तद्धाए एगसमयमादिं काऊण जाव छावलियावसेसाए आसाणं गदा । तेत्तियं[४] पि कालं सासणगुणेण

....

ग्रैवेयकमें मनुष्य आयुसे कम इकतीस सागरोपम आयुकी स्थितिवाले अहमिन्द्र देवोंमें उत्पन्न हुआ । वहां अन्तर्मुहूर्त कम छ्यासठ सागरोपम कालके चरम समयमें परिणामोंके निमित्तसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ । उस सम्यग्मिथ्यात्वमें अन्तर्मुहूर्त काल रहकर पुनः सम्यक्त्वको प्राप्त होकर, विश्राम ले, च्युत हो, मनुष्य हो गया । उस मनुष्य भवमें संयमको अथवा संयमासंयमको परिपालन कर, इस मनुष्यभवसम्बन्धी आयुसे काम बीस सागरोपम आयुकी स्थितिवाले आनत-प्राणत कल्पोंके देवोंमें उत्पन्न होकर पुनः यथाक्रमसे मनुष्यायुसे कम बाईस और चौबीस सागरोपमकी स्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न होकर, अन्तर्मुहूर्त कम दो छ्यासठ सागरोपम कालके अन्तिम समयमें मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ । इस प्रकारसे अन्तर्मुहूर्त कम दो छ्यासठ सागरोपम कालप्रमाण अन्तर प्राप्त हुआ । यह पूर्वमे बताया गया उत्पत्तिका क्रम अव्युत्पन्न जनोंके समझानेके लिए कहा है । परमार्थसे तो जिस किसी भी प्रकारसे दो छ्यासठ सागरोपम काल पूरा करना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जोवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय होता है ॥५॥

जैसे, पहले सासादनसम्यग्दृष्टिका अन्तर कहते हैं-दौ जीवोंको आदि करके एकएक अधिकके क्रमसे पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र विकल्पसे उपशमसम्यग्दृष्टि जीव, उपशमसम्यक्त्वके कालमें एक समयको आदि करके अधिकसे छह आवली कालके अवशेष रह जाने पर सासादन गुणस्थानको प्राप्त हुए । जितना काल अवशेष रहने पर उपशमसम्यक्त्वको

....

[१] मु. प्रतौ अउप्पण्णौ इति पाठ : [२] मु. प्रतौ छावट्ठि इति पाठ : ।

[३] सासादनसम्यग्दृष्टेरन्तरं नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः । xxx सम्यग्मिथ्यादृष्टेरन्तरं नानाजीवापेक्षया सासादनवत् । स.सि. १.८ [४] ता. १- २ प्रत्योः केत्तियं इति पाठः ।

अच्छिय सव्वे मिच्छत्तं गदा। तिसु वि लोगेसु सासणाणमेगसमए अभावो जादो। पुणो विदियसमए सत्तट्ठ जणा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता वा उवसमसम्मादिट्ठिणो आसाणं गदा। लद्धमंतरमेगसमओ।

सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे- सत्तट्ठ जणा बहुआ वा सम्मामिच्छादिट्ठिणो णाणाजीवगदसम्मामिच्छत्तध्दाखएण सम्मत्तं मिच्छतं वा सव्वे पडिवण्णा। तिसु वि लोगेसु सम्मामिच्छादिट्ठिणो एगसमयमभावीभूदा। अणंतरसमए मिच्छाइट्ठिणो सम्मादिट्ठिणो वा सत्तट्ठ जणा बहुआ वा सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णा। लद्धमंतरमेगसमओ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥६॥

णिदरिसणं सासणसम्मादिट्ठिस्स ताव उच्चदे- सत्तट्ठ जणा बहुआ वा उवसमसम्मादिट्ठिणो आसाणं गदा। तेहि आसाणेहि आय-व्वयवसेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालं सासणगुणप्पवाहो अविच्छिण्णो कदो। पुणो अणंतरसमए सव्वे मिच्छत्तं

....

छोडा था, उतने ही कालप्रमाण सासादन गुणस्थानमें रह कर वे सब जीव मिथ्यात्वको प्राप्त हुए, और तीनों ही लोकोंमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंका एक समयके लिए अभाव हो गया। पुनः द्वितीय समयमं अन्य सात आठ जीव, अथवा आवलीके असंख्यातवें भागमात्र जीव, अथवा पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण उपशम सम्यग्दृष्टि जीव सासादन गुणस्थानको प्राप्त हुए। इस प्रकार सासादन गुणस्थानका एक समयरूप जघन्य अन्तर प्राप्त हो गया।

अब सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानका जघन्य अन्तर कहते हैं-सात आठ जन, अथवा बहुतसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव, नाना जीवगत सम्यग्मिथ्यात्वसम्बन्धी कालके क्षयसे सम्यक्त्वको, अथवा मिथ्यात्वको सभीके सभी प्राप्त हुए और तीनों ही लोकोंमें सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव एक समयके लिए अभावरूप हो गये पुनः अनन्तर समयमें ही मिथ्यादृष्टि, अथवा सम्यग्दृष्टि सात-आठ जीव, अथवा बहुतसे जीव, सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुए। इस प्रकारसे सम्यग्मिथ्यात्व का एक समयरूप जघन्य अन्तर प्राप्त हो गया।

उक्त दोनों गुणस्थानोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ॥६॥

उनमेंसे पहले सासादनसम्यग्दृष्टिका उदाहरण कहते हैं-सात आठ जन, अथवा बहुतसे उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सासादन गुणस्थानको प्राप्त हुए। उन सासादन सम्यग्दृष्टि जीवोंके द्वारा आय और व्ययके क्रमवश पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र कालतक सासादन गुणस्थानका प्रवाह अविच्छिन्न चला। पुनः उसका काल समाप्त होनेपर दूसरे समयमें ही वे सभी जीव मिथ्यात्वको प्राप्त हुए, और पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र कालतकके लिए सासादन गुणस्थान

....

[1] उत्कर्षेण पल्योपमासंख्येयभागः। स.सि. १,८

गदा । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालं सासणगुणट्ठाणमंतरिदं । तदो उक्कस्संतरस्स अणंतरसमए सत्तट्ठ जणा बहुआ वा उवसमसम्मादिट्ठिणो आसाणं गदा । लद्धमंतरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे- णाणाजीवगदसम्मामिच्छत्तद्धाए उक्कस्संतरजोग्गाए अदिक्कंताए सव्वे सम्मामिच्छादिट्ठिणो सम्मत्तं मिच्छत्तं वा पडिवण्णा । अंतरिदं सम्मामिच्छत्तगुणट्ठाणं । पुणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तउक्कस्संतरकालस्स अणंतरसमए अट्ठावीससंतकम्मिय-मिच्छादिट्ठिणो वेदगसम्मादिट्ठिणो उवसमसम्मादिट्ठिणो वा सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णा । लद्धमंतरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं[1] ॥७॥

'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो सासणसम्मादिट्ठिस्स पढमं उच्चदे- एक्को सासणसम्मादिट्ठी उवसमसम्मत्तपच्छायदो केत्तियं पि कालमासाणगुणेणच्छिय मिच्छत्तं गदो अंतरिदो । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालेण भूओ उवसमसम्मत्तं

....

अन्तरको प्राप्त हो गया । पुनः इस पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण उत्कृष्ट अन्तरकालके अनन्तर समयमें ही सात आठ जन, अथवा बहुतसे उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सासादन गुणस्थानको प्राप्त हुए । इस प्रकारसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण सासादनका उत्कृष्ट अन्तरकाल प्राप्त हो गया ।

अब सम्यग्मिथ्यादृष्टिका उत्कृष्ट अन्तरकाल कहते हैं- उत्कृष्ट अन्तरके योग्य, नाना जीवगत सम्यग्मिथ्यात्वकालके व्यतिक्रान्त होने पर, सभी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव सम्यक्त्वको, अथवा मिथ्यात्वको प्राप्त हुए । इस प्रकारसे सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान अन्तरको प्राप्त हुआ । पुनः पल्योपमके अंसख्यातवें भागमात्र उत्कृष्ट अन्तरकालके अनन्तर समयमें ही मोह कर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाले मिथ्यादृष्टि, अथवा वेदकसम्यग्दृष्टि, अथवा उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुए । इस प्रकारसे सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानका पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हो गया ।

सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर क्रमशः पल्योपमके असंख्यातवें भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥७॥

जिस प्रकारसे उद्देश होता है, उसी प्रकारसे निर्देश होता है, इस न्यायसे सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानका अन्तर पहले कहते हैं- उपशम सम्यक्त्वसे पीछे लौटा हुआ कोई एक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव कितने ही काल तक सासादन गुणस्थानमें रहा और फिर मिथ्यात्वको प्राप्त हो अन्तरको प्राप्त हुआ । पुनः पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र कालसे उपशमसम्यक्त्वको

....

[1] एकजीवं प्रति जघन्येन पल्योपमासंख्येयभागः। x x x सम्यग्मिथ्यादृष्टेः x x x एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः । स.सि. १,८.

पडिवज्जिय छावलियावसेसाए उवसमसम्मत्तद्धाए आसाणं गदो। लद्धमंतरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। अंतोमुहुत्तकालेण आसाणं किण्ण णीदो ? ण, उवसमसम्मत्तेण विणा आसाणगुणग्गहणाभावा। उवसमसम्मत्तं पि अंतोमुहुत्तेण किण्ण पडिवज्जदे ? ण, उवसमसम्मादिट्ठि मिच्छत्तं गंतूण सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणि उव्वेल्लमाणो तेसिमंतोकोडाकोडीमेत्तट्ठिदिं घादिय सागरोवमादो सागरोवमपुधत्तादो वा जाव हेट्ठा ण करेदि ताव उवसमसम्मत्तग्गहणसंभवाभावा। ताणं ट्ठिदीओ अंतोमुहुत्तेण घादिय सागरोवमादो सागरोवमपुधत्तादो वा हेट्ठा किण्ण करेदि? ण, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तायामेहि[1] अंतोमुहुत्तुक्कीरणकालेहि उव्वेल्लणखंडएहि घादिज्जमाणाए सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तट्ठिदीए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालेण विणा सागरोवमस्स वा सागरोवमपुधत्तस्स वा हेट्ठा पदणाणुववत्तीदो। सासणपच्छायदमिच्छाइट्ठिं संजमं गेण्हाविय दंसणतियमुवसामिय

प्राप्त होकर, उपशमसम्यक्त्वके कालमें छह आवली काल अवशेष रहने पर सासादन गुणस्थानको प्राप्त हो गया। इस प्रकारसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण अन्तरकाल उपलब्ध हो गया।

शंका - पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कालके स्थानमें अन्तर्मुहूर्त कालद्वारा सासादन गुणस्थानको क्यों नहीं प्राप्त कराया ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, उपशमसम्यत्वके विना सासादन गुणस्थानके ग्रहण करनेका अभाव है।

शंका- यह जीव उपशमसम्यत्वको भी अन्तर्मुहूर्तकालके पश्चात् ही क्यों नही प्राप्त होता है?

समाधान - नहीं, क्योंकि, उपशमसम्यग्दृष्टि जीव मिथ्यात्वको प्राप्त होकर, सम्यक्त्वप्रकृति और सम्यग्मिथ्यात्वप्रकृतिकी उद्वेलना करता हुआ, उनकी अन्तःकोडाकोडी प्रमाण स्थितिको घात करके जबतक सागरोपमसे, अथवा सागरोपमपृथक्त्वसे नीचे नहीं करता है, तबतक उपशम-सम्यक्त्वका ग्रहण करना संभव नहीं है।

शंका - यह जीव उक्त प्रकृतिकी स्थितियोंका अन्तर्मुहूर्तकाल द्वारा घात करके सागरोपमसे, अथवा सागरोपमपृथक्त्व कालसे नीचे क्यों नहीं करता ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण आयामवाले तथा अन्तर्मुहूर्त उत्कीरणकालवाले उद्वेलनाकांडकोंसे घात की जानेवाली सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वप्रकृतिकी स्थितिका, पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण कालके विना सागरोपम, अथवा सागरोपमपृथक्त्व प्रमाण स्थितिसे नीचे पतन नहीं हो सकता है।

शंका- सासादन गुणस्थानसे पीछे लौटे हुए मिथ्यादृष्टि जीवको संयम ग्रहण कराकर और दर्शनमोहनीयकी तीन प्रकृतियोंका उपशमन कराकर, पुनः चारित्रमोहका उपशम करा और नीचे

[1] मु. प्रतौ भागमेत्तायामेण इति पाठः।

पुणो चरित्तमोहमुवसामेदूण हेट्ठा ओयरिय आसाणं गदस्स अंतोमुहुत्तंतरं किण्ण परूविदं ? ण, उवसमसेढीदो ओदिण्णाणं सासणगमणाभावादो तं पि कुदो णव्वदे? एदम्हादो चेव भूदबलीवयणादो ।

सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे-एक्को सम्मामिच्छादिट्ठि परिणामपच्चएण मिच्छत्तं सम्मत्तं वा पडिवण्णो अंतरिदो । अंतोमुहुत्तेण भूओ सम्मामिच्छत्तं गदो । लद्धमंतरमंतोमुहुत्तं ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं[1] ॥८॥

ताव सासणस्सुदाहरणं वुच्चदे-एक्केण अणादियमिच्छादिट्ठिणा तिण्णि करणाणि कादूण उवसमसम्मत्तं पडिवण्णपढमसमए अणंतो संसारो छिण्णो अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तो कदो । पुणो अंतोमुहुत्तं सम्मत्तेणच्छिय आसाणं[2] गदो (१)। मिच्छत्तं पडिवज्जिय अंतरिदो अद्धपोग्गलपरियट्टं मिच्छत्तेण परिभमिय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो एगसमयावसेसाए उवसमसम्मत्तद्धाए आसाणं गदो । लद्धमंतरं । भूओ मिच्छादिट्ठी जादो (२) । वेदगसम्मत्तं

नीचे उतारकर, सासादन गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके अन्तर्मुहूर्त प्रमाण अन्तर क्यों नहीं बताया?

समाधान - नहीं, क्योंकि, उपशमश्रेणीसे उतरनेवाले जीवोंके सासादन गुणस्थानमें गमन करनेका अभाव है ।

शंका- यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान - भूतबली आचार्यके इसी वचनसे जाना जाता है ।

अब सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर कहते हैं- एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव परिणामोंके निमित्तसे मिथ्यात्वको, अथवा सम्यक्त्वको प्राप्त हो अन्तरको प्राप्त हुआ और अन्तर्मुहूर्त कालके पश्चात् ही पुनः सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ । इस प्रकारसे अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अन्तरकाल प्राप्त हो गया ।

उक्त दोनों गुणस्थानोंका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अर्धपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है ॥८॥

उनमेंसे पहले सासादन गुणस्थानका उदाहरण कहते हैं-एक अनादि मिथ्यादृष्टि जीवने अधःप्रवृत्तादि तीनों करण करके उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होनेके प्रथम समयमें अनन्त संसारको छिन्न कर अर्धपुद्गलपरिवर्तनमात्र किया । पुनः अन्तर्मुहूर्तकाल सम्यक्त्वके साथ रहकर वह सासादनम्यक्त्वको प्राप्त हुआ (१) पुनः मिथ्यात्वको प्राप्त होकर अन्तरको प्राप्त हुआ और अर्धपुद्गलपरिवर्तनकाल मिथ्यात्वके साथ परिभ्रमणकर संसारके अन्तर्मुहूर्त अवशेष रह जाने पर उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ । पुनः उपशमसम्यक्त्वके कालमें एक समय शेष रह जाने पर सासादन गुणस्थानको प्राप्त हुआ । इस प्रकारसे सूत्रोक्त अन्तरकाल प्राप्त हो गया । पुनः मिथ्यादृष्टि हुआ । (२) पुनः वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होकर (३) अनन्तानुबन्धीकषायका -

[1] उत्कर्षेणार्द्धपुद्गलपरिवर्तो देशोनः । स.सि. १,८. [2] आणं इति पाठः ता. १.२. प्रत्योः ।

पडिवज्जिय (३) अणंताणुबंधिं विसंजोजिय (४) दंसणमोहणीयं खविय (५) अप्पमत्तो जादो (६)। तदो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (७) खवगसेढीपाओग्गविसोहीए विसुज्झिऊण (८) अपुव्वखवगो (९) अणियट्टिखवगो (१०) सुहुमखवगो (११) खीणकसाओ (१२) सजोगिकेवली (१३) अजोगिकेवली (१४) होदूण सिद्धो जादो। एवं समयाहियचोद्दसअंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं सासणसम्मादिट्ठिस्स उक्कस्संतरं होदि।

सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे-एक्केण अणादियमिच्छादिट्ठिणा तिण्णि वि करणाणि कादूण उवसमसम्मत्तं गेण्हंतेण गहिदसम्मत्तपढमसमए अणंतो संसारो छिंदिदूण अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तो कदो। उवसमसम्मत्तेण अंतोमुहुत्तमच्छिय (१) सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो (२)। मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो। अद्धपोग्गलपरियट्टं परिभमिय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो। तत्थेव अणंताणुबंधिं विसंजोइय सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो। लद्धमंतरं (३)। तदो वेदगसम्मत्तं पडिवज्जिय (४) दंसणमोहणीयं खवेदूण (५) अप्पमत्तो जादो (६)। पुणो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं करिय (७) खवगसेढीपाओग्ग-

....

विसंयोजन कर (४) दर्शनमोहनीयका क्षयकर (५) अप्रमत्तसंयत हुआ (६)। पुनः प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थानोंमें सहस्रों परावर्तनोंको करके (७) क्षपकश्रेणीके प्रायोग्य विशुद्धिसे विशुद्ध होकर (८) अपूर्वकरण क्षपक (९), अनिवृत्तिकरण क्षपक (१०) सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपक (११) क्षीणकषायवीतराग छद्मस्थ (१२) सयोगिकेवली (१३) और अयोगिकेवली (१४) होकरके सिद्ध हो गया। इस प्रकारसे एक समय अधिक चौदह अन्तर्मुहूर्तसे कम अधपुद्गलपरिवर्तन सासादनसम्यग्दृष्टिका उत्कृष्ट अन्तरकाल होता है।

अब सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर कहते हैं - एक अनादि मिथ्यादृष्टि जीवने तीनों ही करण करके उपशमसम्यक्त्वको ग्रहण करते हुए सम्यक्त्व ग्रहण करनेके प्रथम समयमें अनन्त संसार छेदकर अर्धपुद्गलपिरवर्तन मात्र किया। उपशमसम्यक्त्वके साथ अन्तर्मुहूर्त रहकर वह (१) सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ (२)। पुनः मिथ्यात्वको प्राप्त हो अन्तरको प्राप्त हो गया। पश्चात् अर्धपुद्गलपरिवर्तकाल प्रमाण परिभ्रमण कर संसारके अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अवशेष रहने पर उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ, और वहांपर ही अनन्तानुबंधीकषायकी विसंयोजना कर सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ। इस प्रकारसे अन्तर उपलब्ध हो गया (३)। तत्पश्चात् वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त कर (४) दर्शनमोहनीयका क्षपण करके (५) अप्रमत्तसंयत हुआ (६)। पुनः प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थानसम्बन्धी परावर्तनोंको करके (७) क्षपकश्रेणीके प्रायोग्य विशुद्धिसे विशुद्ध

विसोहीए विसुज्झिय (८) अपुव्वखवगो (९) अणियट्टिखवगो (१०) सुहुमखवगो (११) खीणकसाओ (१२) सजोगिकेवली (१३) अजोगिकेवली (१४) होदूण सिद्धिं गदो। एदेहि चोद्दसअंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं सम्मामिच्छत्तुक्कस्संतरं होदि।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति अंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[1] ॥९॥

कुदो ? सव्वकालमेदाणमुवलंभा।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[2] ॥१०॥

एदस्स सुत्तस्स गुणट्ठाणपरिवाडीए अत्थो उच्चदे। तं जहा- एक्को असंजदसम्मादिट्ठी संजमासंजमं पडिवण्णो। अंतोमुहुत्तमंतरिय भूओ असंजदसम्मादिट्ठी जादो। लद्धमंतरमंतोमुहुत्तं। संजदासंजदस्स उच्चदे - एक्को संजदासंजदो असंजदसम्मादिट्ठिं मिच्छादिट्ठिं संजमं वा[3] पडिवण्णो। अंतोमुहुत्तमंतरिय भूओ संजमासंजमं पडिवण्णो। लद्धमंतोमुहुत्तं जहण्णंतरं संजदासंजदस्स। पमत्तसंजदस्स उच्चदे - एगो पमत्तो अप्पमत्तो

होकर (८) अपूर्वकरण क्षपक (९) अनिवृत्तिकरण क्षपक (१०) सूक्ष्मसाम्पराय क्षपक (११) क्षीणकषाय (१२) सयोगिकेवली (१३) और अयोगिकेवली (१४) होकरके सिद्धपदको प्राप्त हुआ। इन चौदह अन्तर्मुहुर्तोंसे कम अर्धपुद्गलपरिवर्तन सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट अन्तरकाल होता है।

असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानको आदि लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तकके प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥९॥

क्योंकि, सर्वकाल ही सूत्रोक्त गुणस्थानवर्ती जीव पाये जाते हैं।

उक्त गुणस्थानोंकी एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है ॥१०॥

इस सूत्रका गुणस्थानकी परिपाटीसे अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है-एक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव संयमासंयमको प्राप्त हुआ। वहांपर अन्तर्मुहूर्तकाल रह कर अन्तरको प्राप्त हो, पुनः असंयतसम्यग्दृष्टि हो गया। इस प्रकारसे अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अन्तरकाल प्राप्त हो गया।

अब संयतासंयतका अन्तर कहते हैं - एक संयतासंयत जीव, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानको, अथवा मिथ्यादृष्टि गुणस्थानको, अथवा संयमको प्राप्त हुआ और अन्तर्मुहूर्तकाल वहांपर रह कर अन्तरको प्राप्त हो पुनः संयमासंयमको प्राप्त होगया। इस प्रकारसे संयतासंयतका अन्तर्मुहूर्तकाल प्रमाण जघन्य अन्तर प्राप्त हुआ।

[1] असंयतसम्यग्दृष्ट्याद्यप्रमत्तान्तानां नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम्। स.सि. १,८ [2] एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः। स.सि. १,८. [3] ता. 2 प्रतौ असंजदसम्मादिट्ठि संजमं वा इति पाठः।

होदूण सव्वलहुं पुणो वि पमत्तो जादो । लद्धमंतोमुहुत्तं जहण्णंतरं पमत्तस्स । अप्पमत्तस्स उच्चदे- एगो अप्पमत्तो उवसमसेढीमारुहिय पडिणियत्तो अप्पमत्तो जादो । लद्धमंतरं जहण्णमप्पमत्तस्स । हेट्ठिमगुणेसु किण्ण अंतराविदो ? ण, उवसमसेढीसव्वगुणट्ठाणद्धाणाहिंतो हेट्ठिमएग-गुणट्ठाणद्धाए संखेज्जगुणत्तादो ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं[1] ॥११॥

गुणट्ठाणपरिवाडीए उक्कस्संतरपरूवणा कीरदे - एक्केण अणादियमिच्छादिट्ठिणा तिण्णि करणाणि कादूण पढमसम्मत्तं गेण्हंतेण अणंतो संसारो छिंदिदूण गदिसम्मत्तपढमसमए अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तो कदो । उवसमसम्मत्तेण अंतोमुहुत्तमच्छिय (१) छावलियावसेसाए उवसमसम्मत्तद्धाए आसाणं गंतूणंतरिदो । मिच्छत्तेणद्धपोग्गलपरियट्टं भमिय अपच्छिमे भवे संजमं वा गंतूण कदकरणिज्जो होदूण अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे परिणामपच्चएण असंजदसम्मादिट्ठी

....

अब प्रमत्तसंयतका अन्तर कहते हैं - एक प्रमत्तसंयत जीव, अप्रमत्तसंयत होकर सर्वलघु कालके पश्चात् फिर भी प्रमत्तसंयत होगया । इस प्रकार प्रमत्तसंयतका अन्तर्मुहूर्तकाल प्रमाण जघन्य अन्तर प्राप्त हुआ ।

अब अप्रमत्तसंयतका अन्तर कहते हैं - एक अप्रमत्तसंयत जीव उपशमश्रेणीपर चढकर पुनः लौटा और अप्रमत्तसंयत होगया । इस प्रकारसे अन्तर्मुहूर्तकाल प्रमाण जघन्य अन्तर अंप्रमत्तसंयतका उपलब्ध हुआ ।

शंका- नीचेके प्रमत्तादि गुणस्थानोंमें भेजकर अप्रमत्तसंयतका जघन्य अन्तर क्यों नहीं बताया ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, उपशमश्रेणीके सभी गुणस्थानोंके कालोंसे प्रमत्तादि नीचेके एक गुणस्थानका काल भी संख्यातगुणा होता है ।

उक्त असंयतादि चारों गुणस्थानोंका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम अर्धपुद्गल-परिवर्तनप्रमाण है ॥११॥

अब गुणस्थान-परिपाटीसे उत्कृष्ट अन्तरकी प्ररूपणा करते हैं- एक अनादि मिथ्यादृष्टि जीवने तीनों करण करके प्रथमोपशमसम्यक्त्वको ग्रहण करते हुए अनन्त संसार छेदकर सम्यक्त्व ग्रहण करनेके प्रथम समयमें वह संसार अर्धपुद्गलपरिवर्तनमात्र किया । पुनः उपशमसम्यक्त्वके सात अन्तर्मुहूर्तकाल रह कर (१) उपशमसम्यक्त्वके कालमें छह आवलियां अवशेष रह जाने पर सासादन गुणस्थानको प्राप्त होकर अन्तरको, प्राप्त हुआ । पुनः मिथ्यात्वके साथ अर्धपुद्गलपरिवर्तन प्ररिभ्रमण कर अन्तिम भवमें संयमको, अथवा संयमासंयमको प्राप्त होकर, कृतकृत्य वेदकसम्यक्त्वी होकर अन्तर्मुहूर्तकाल प्रमाण संसारके अवशेष रह जाने पर परिणामोंके निमित्तसे असंयतसम्यग्दृष्टि

....

[1] उत्कर्षेणार्द्धपुद्गलपरिवर्तो देशोनः । स.सि. १,८

जादो। लद्धमंतरं (२) पुणो अप्पमत्तभावेण संजमं पडिवज्जिय (३) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (४) खवगसेडीपाओग्गविसोहीए विसुज्झिय (५) अपुव्वो (६) अणियट्टी (७) सुहुमो (८) खीणो (९) सजोगी (१०) अजोगी (११) होदूण परिणिउदो। एवमेक्कारसेहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टमसंजदसम्मादिट्ठीणमुक्कस्संतरं होदि।

संजदासंजदस्स उच्चदे-एक्केण अणादियमिच्छादिट्ठिणा तिण्णि करणाणि कादूण गहिदसम्मत्तपढमसमए सम्मत्तगुणेण अणंतो संसारो छिण्णो अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तो कदो। सम्मत्तेण सह गहिदसंजमासंजमेण अंतोमुहुत्तमच्छिय छावलियावसेसाए उवसमसम्मत्तद्धाए आसाणं गदो (१) अंतरिदो मिच्छत्तेण अद्धपोग्गलपरियट्टं परिभमिय अपच्छिमे भवे सासंजमं सम्मत्तं संजमं वा पडिवज्जिय कदकरणिज्जो होदूण परिणामपच्चएण संजमासंजमं पडिवण्णो (२)। लद्धमंतरं। अप्पमत्तभावेण संजमं पडिवज्जिय (३) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं[1] कादूण (४) खवगसेढीपाओग्गविसोहीए विसुज्झिय (५) अपुव्वो (६) अणियट्टी (७) सुहुमो (८) खीणकसाओ (९) सजोगी (१०) अजोगी (११) होदूण परिणिव्वुदो। एवमेक्कारसेहि

हो गया। इस प्रकार सूत्रोक्त अन्तरकाल प्राप्त हुआ (२)। पुनः अप्रमत्तभावके साथ संयमको प्राप्त होकर (३) प्रमत्त-अप्रमत्त गुणस्थानसम्बन्धी सहस्रों परावर्तनोंको करके (४) क्षपकश्रेणीके प्रायोग्य विशुद्धिसे विशुद्ध होकर (५) अपूर्वकरणसंयत अनिवृत्तिकरणसंयत(७) सूक्ष्मसाम्परायसंयत (८) क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ (९) सयोगिकेवली (१०) और अयोगिकेवली (११) होकर निर्वाणको प्राप्त हो गया। इस प्रकारसे इन ग्यारह अन्तर्मुहूर्तोंसे कम अर्धपुद्गलपरिवर्तनकाल असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर होता है।

अब संयतासंयतका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं - एक अनादि मिथ्यादृष्टि जीवने तीनों करण करके सम्यक्त्व ग्रहण करनेके प्रथम समयमें सम्यक्त्वगुणके द्वारा अनन्त संसार छेदकर अर्धपुद्गलपविर्तनप्रमाण किया। पुनः सम्यक्त्वके साथ ही ग्रहण किये गये संयमासंयमके साथ अन्तर्मुहूर्तकाल रहकर, उपशमसम्यक्त्वके कालमें छह आवलियां अवशेष रहजाने पर सासादनगुणस्थानको प्राप्त हो (१) अन्तरको प्राप्त हो गया और मिथ्यात्वके साथ अर्धपुद्गलपरिवर्तन परिभ्रमण कर अन्तिम भवमें असंयमसहित सम्यक्त्वको, अथवा संयमासंयमको प्राप्त होकर कृतकृत्य वेदकसम्यक्त्वी हो परिणामोंके निमित्तसे संयमासंयमको प्राप्त हुआ। (२)। इस प्रकारसे इस गुणस्थानका अन्तर प्राप्त हो गया। पुनः अप्रमत्तभावके साथ संयमको प्राप्त होकर (३) प्रमत्त-अप्रमत्त गुणस्थानसम्बन्धी सहस्रों परावर्तनोंको करके (४) क्षपकश्रेणीके योग्य विशुद्धिसे विशुद्ध होकर (५) अपूर्वकरण (६) अनिवृत्तिकरण (७) सूक्ष्मसाम्पराय (८) क्षीणकषाय

[1] ता. १ प्रतौ-पमत्तसहस्सं इति पाठः। ता. [2] प्रतौ पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं इति पाठो नोपलभ्यते।

अंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टमुक्कस्संतरं संजदासंजदस्स होदि।

पमत्तस्स उच्चदे- एक्केण अणादियमिच्छादिट्ठिणा तिण्णि करणाणि कादूण उवसमसम्मत्तं संजमं च जुगवं पडिवज्जंतेण अणंतो संसारो छिंदिओ, अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तो कदो। अंतोमुहुत्तमच्छिय (१) पमत्तो जादो (२)। आदी दिट्ठा। छावलियावसेसाए उवसमसम्मत्तद्धाए आसाणं गंतूणंतरिय मिच्छत्तेणद्धपोग्गलपरियट्टं परियट्टिय अपच्छिमे भवे सासंजमसम्मत्तं संजमासंजमं वा पडिवज्जिय कदकरणिज्जो होऊण अप्पमत्तभावेण संजमं पडिवज्जिय पमत्तो जादो (३)। लद्धमंतरं। तदो खवगसेढीपाओग्गो अप्पमत्तो जादो (४)। पुणो अपुव्वो (५) अणियट्टी (६) सुहुमो (७) खीणकसाओ (८) सजोगी (९) अजोगी (१०) होदूण णिव्वाणं गदो। एवं दसहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं पमत्तस्सुक्कस्संतरं होदि।

अप्पमत्तस्स उच्चदे- एक्केण अणादियमिच्छादिट्ठिणा तिण्णि वि करणाणि करिय उवसमसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णेण छेत्तूण अणंतो संसारो अद्ध-

सयोगिकेवली (१०) और अयोगिकेवली (११) होकर निर्वाणको प्राप्त हुआ। इस प्रकारसे इन ग्यारह अन्तर्मुहूर्तोंसे कम अर्धपुद्‌गलपरिवर्तनकाल संयतासंयतका उत्कृष्ट अन्तर होता है।

अब प्रमत्तसंयतका अन्तर कहते हैं- एक अनादि मिथ्यादृष्टि जीवने तीनों ही करण करके उपशमसम्यक्त्व और संयमको एक साथ प्राप्त होते हुए अनन्त संसार छेदकर अर्धपुद्‌गलपरिवर्तनमात्र किया। पुनः उस अवस्था में अन्तर्मुहूर्त रह कर (१) प्रमत्तसंयत हुआ (२)। इस प्रकारसे यह अर्धपुद्‌गलपरिवर्तनकी आदि दृष्टिगोचर हुई। पुनः उपशम सम्यक्त्वके कालमें छह आवलियां अवशेष रहजाने पर सासादन गुणस्थानको जाकर अन्तरको प्राप्त होकर मिथ्यात्वके साथ अर्धपुद्‌गलपरिवर्तनकाल परिभ्रमण कर अन्तिम भवमें असंयम-सहित सम्यक्त्वको, अथवा संयमासंयमको प्राप्त होकर कृतकृत्य वेदक सम्यक्त्वी हो अप्रमत्तभावके साथ संयमको प्राप्त होकर प्रमत्तसंयत हो गया (३)। इस प्रकारसे इस गुणस्थानका अन्तर प्राप्त हो गया। पश्चात् क्षपकश्रेणीके प्रायोग्य अप्रमत्तसंयत हुआ (४)। पुनः अपूर्वकरणसंयत (5) अनिवृत्तिकरणसंयत (६) सूक्ष्मसाम्परायसंयत (७) क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ (८) सयोगिकेवली (९) और अयोगिकेवली (१०) होकर निर्वाणको प्राप्त हुआ। इस प्रकारसे दश अन्तर्मुहूर्तोंसे कम अर्धपुद्‌गलपरिवर्तन काल प्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर होता है।

अब अप्रमत्तसंयतका अन्तर कहते हैं- एक अनादि मिथ्यादृष्टि जीवने तीनों ही करण करके उपशमसम्यक्त्वको और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानको एक साथ प्राप्त होकर सम्यक्त्व ग्रहण करनेके प्रथम समयमें ही अनन्त संसार छेदकर अर्धपुद्‌गलपरिवर्तन मात्र किया

पोग्गलपरियट्टमेत्तो पढमसमए कदो। तत्थंतोमुहुत्तमच्छिय (१) पमत्तो जादो अंतरिदो मिच्छत्तेण अद्धपोग्गलपरियट्टं परियट्टिय अपच्छिमे भवे सम्मत्तं संजमासंजमं वा पडिवज्जिय सत्त कम्माणि खविय अप्पमत्तो जादो (२)। लद्धमंतरं। पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (३) अप्पमत्तो जादो (४)। अपुव्वो (५) अणियट्टी (६) सुहुमो (७) खीणकसाओ (८) सजोगी (९) अजोगी (१०) होदूण णिव्वाणं गदो लद्धमुक्कस्संतरं दसहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं[1]।

चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं[2] ॥१२॥

अपुव्वस्स ताव उच्चदे- सत्तट्ठ जणा बहुआ वा अपुव्वकरणउवसामगद्धाए खीणाए अणियट्टिउवसामगा वा अप्पमत्ता वा कालं करिय देवा जादा। एगसमयमंतरिदमपुव्वगुणट्ठाणं। तदो बिदियसमए अप्पमत्ता वा ओदरंता अणियट्टिणो वा अपुव्वकरणउवसामगा जादा। अद्धमेगसमयमंतरं। एवं चेव अणियट्टिउवसामगाणं सुहुमउवसामगाणं उवसंतकसायाणं च जहण्णंतरमेगसमओ वत्तव्वो।

....

उस अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें अन्तर्मुहूर्त रहकर (१) प्रमत्तसंयत हुआ और अन्तरको प्राप्त होकर मिथ्यात्वके साथ अर्धपुद्गलपरिवर्तन काल परिवर्तन कर अन्तिम भवमें सम्यक्त्व अथवा संयमासंयमको प्राप्त होकर दर्शनमोहकी तीन और अनन्तानुबंधीकी चार, इन सात प्रकृतियोंका क्षपण कर अप्रमत्तसंयत हो गया (2)। इस प्रकार अप्रमत्तसंयतका अन्तरकाल उपलब्ध हुआ। पुनः प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थानमें सहस्रों परावर्तनोंको करके (३) अप्रमत्तसंयत हुआ (४)। पुनः अपूर्वकरण (५) अनिवृत्तिकरण (६) सूक्ष्मसाम्पराय (७) क्षीणकषाय (८) सयोगिकेवली (९) और अयोगिकेवली (१०) होकर निर्वाणको प्राप्त हुआ। इस प्रकार दश अन्तर्मुहूर्त कम अर्धपुद्गलपरिवर्तनकाल प्रमाण अप्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हो गया।

उपशमश्रेणीके चारों उपशामकोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय अन्तर है ॥१२॥

उनमेंसे पहले अपूर्वकरण उपशामकका अन्तर कहते हैं-सात आठ जन, अथवा बहुतसे जीव, अपूर्वकरण गुणस्थानके उपशामककाल क्षीण हो जाने पर अनिवृत्तिकरण उपशामक अथवा अप्रमत्तसंयत होकर तथा मरण करके देव हुए। इस प्रकार एक समयके लिये अपूर्वकरण गुणस्थान अन्तरको प्राप्त होगया। तत्पश्चात् द्वितीय समयमें उपशामक हो गए। इस प्रकार एक समय प्रमाण अन्तरकाल लब्ध होगया। इसी प्रकारसे अनिवृत्तिकरण उपशामक, सूक्ष्मसाम्पराय उपशामक और उपशान्तकषाय उपशामकोंका एक समय प्रमाण जघन्य अन्तर कहना चाहिए।

....

[1] मु. प्रतौ-गदो। एवं दसहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं (अप्पमत्तुक्कस्संतरं होदि) इति पाठः।

[2] चतुर्णामुपशमकानां नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः। स.सि. १,८.

उक्कस्सेण वासपुधत्तं[1] ॥१३॥

तं जधा–सत्तट्ठ जणा बहुआ वा अपुव्वउवसामगा अप्पमत्ता वा कालं करिय देवा जादा[2]। अंतरिदमपुव्वगुणट्ठाणं जाव उक्कस्सेण वासपुधत्तं। तदो अदिक्कंते वासपुधत्ते सत्तट्ठ जणा बहुआ वा अप्पमत्ता अपुव्वकरणुवसामगा[3] जादा। लद्धमुक्कस्संतरं वासपुधत्तं। एवं चेव सेसतिण्हमुवसामगाणं वासपुधत्तंतरं वत्तव्वं, विसेसाभावा।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[4] ॥१४॥

तं जधा–एक्को अपुव्वकरणो अणियट्टिउवसामगो सुहुमउवसामगो उवसंतकसाओ होदूण पुणो वि सुहुमउवसामगो अणियट्टिउवसामगो होदूण अपुव्वउवसामगो जादो। लद्धमंतरं। एदाओ पंच वि अद्धाओ एक्कट्ठं कदे वि अंतोमुहुत्तमेव होदि त्ति जहण्णंतरमंतोमुहुत्तं होदि।

एवं चेव सेसतिण्हमुवसामगाणमेगजीवजहण्णंतरं वत्तव्वं। णवरि अणियट्टिउवसा–

....

उक्त चारों उपशामकोंका उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥१३॥

जैसे-सात, आठ, जन अथवा बहुतसे अपूर्वकरण उपशामक जीव, अनिवृत्तिकरण उपशामक अथवा अप्रमत्तसंयत हुए और वे मरण करके देव हुए। इस प्रकार यह अपूर्वकरण उपशामक गुणस्थान उत्कृष्टरूपसे वर्षपृथक्त्वके लिए अन्तरको प्राप्त होगया। तत्पश्चात् वर्षपृथक्त्वकालके व्यतीत होनेपर, सात, आठ अथवा बहुतसे अप्रमत्तसंयतजीव अपूर्वकरण उपशामक हुए। इस प्रकार वर्षपृथक्त्व प्रमाण उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त होगया। इसी प्रकार अनिवृत्तिकरणादि तीनों उपशामकोंका अन्तर वर्षपृथक्त्व प्रमाण कहना चाहिये, क्योंकि, अपूर्वकरण उपशामकके अन्तरसे तीनों उपशामकोंके अन्तरमें कोई विशेषता नहीं है।

चारों उपशामकोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१४॥

जैसे-एक अपूर्वकरण उपशामक जीव, अनिवृत्ति उपशामक, सूक्ष्मसाम्परायिक उपशामक और उपशान्तकषाय उपशामक होकर फिर भी सूक्ष्मसाम्परायिक उपशामक और अनिवृत्तिकरण उपशामक होकर अपूर्वकरण उपशामक होगया। इस प्रकार अन्तर्मुहूर्तकाल प्रमाण जघन्य अन्तर उपलब्ध हुआ। ये अनिवृत्तिकरणसे लगाकर पुनः अपूर्वकरण उपशामक होनेके पूर्व तकके पांचों ही गुणस्थानोंके कालोंको एकत्र करने पर भी वह काल अन्तर्मुहूर्त ही होता है, इसलिए जघन्य अन्तर भी अन्तर्मुहूर्त ही होता है।

इसी प्रकार शेष तीनों उपशामकोंका एक जीवसम्बन्धी जघन्य अन्तर कहना चाहिए। विशेष बात यह है कि अनिवृत्तिकरण उपशामकके सूक्ष्मसाम्परायिक सम्बन्धी दो

....

[1] उत्कर्षेण वर्षपृथक्त्वम्। स.सि.,

[2] ताः १ २ ३ प्रतिषु देवा वाजादा इति.पाठः।

[3] ता. २ प्रतौ अपुव्व उवसामगा इति पाठः।

[4] एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः। स.सि.१,८

मगस्स दो सुहुमद्धाओ एगा उवसंतकसायद्धा च जहण्णंतरं होदि। सुहुमउवसामगस्स उवसंतकसायद्धा एक्का चेव जहण्णंतरं होदि। उवसंतकसायस्स पुण हेट्ठा उवसंतकसायमोदारिय[1] सुहुमसांपराओ अणियट्टिकरणो अपुव्वकरणो अप्पमत्तो होदूण पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं करिय अप्पमत्तो अपुव्वो अणियट्टी सुहुमो होदूण पुणो उवसंतकसायगुणट्ठाणं पडिवण्णस्स णवद्धसमूहमेत्तमंतोमुहुत्तमंतरं होदि।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं[2] ॥१५॥

अपुव्वस्स ताव उच्चदे-एक्केण अणादियमिच्छादिट्ठिणा तिण्णि करणाणि करिय उवसमसम्मत्तं संजमं च अक्कमेण पडिवण्णपढमसमए अणंतसंसारं छिंदिय अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तं कदेण अप्पमत्तद्धा अंतोमुहुत्तमेत्ता अणुपालिदा (१)। तदो पमत्तो जादो (२)। वेदगसम्मत्तमुवसामिय[3] (३) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (४) उवसमसेढीपाओग्गो अप्पमत्तो जादो (५)। अपुव्वो (६) अणियट्टी (७) सुहुमो (८) उवसंतकसायो (९) पुणो सुहुमो (१०) अणियट्टी (११) अपुव्वकरणो जादो (१२)। हेट्ठा पडिय अंतरिदो

....

अन्तर्मुहूर्तकाल और उपशान्तकषायसम्बन्धी एक अन्तर्मुहूर्तकाल, ये तीनों मिलाकर जघन्य अन्तर होता है। सूक्ष्मसाम्परायिक उपशामकके उपशान्तकषाय सम्बन्धी एक अन्तर्मुहूर्तकाल ही जघन्य अन्तर होता है। किन्तु उपाशन्तकषाय उपशामकका उपशान्तकषायको नीचे उतारकर सूक्ष्मसाम्पराय (१) अनिवृत्तिकरण (२) अपूर्वकरण (३) और अप्रमत्तसंयत (४) होकर, प्रमत्त ओर अप्रमत्त गुणस्थानसंबंधी सहस्रों परावर्तनोंको करके (५) पुनः अप्रमत्त (६) अपूर्वकरण (७) अनिवृत्तिकरण (८) और सूक्ष्मसाम्परायिक होकर (९) पुनः उपशान्तकषाय गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके नौ अद्धाओंका सम्मिलित प्रमाण अन्तर्मुहूर्तकाल अन्तर प्रमाण होता है।

उक्त चारों उपशामकोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अर्ध--पुद्गलपरिवर्तन काल है ॥१५॥

इनमेंसे पहले एक जीवकी अपेक्षा अपूर्वकरण गुणस्थानका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं-एक अनादि मिथ्यादृष्टि जीवने तीनों ही करण करके उपशमसम्यक्त्व और संयमको एक साथ प्राप्त होनेके प्रथम समयमें ही अनन्त संसारको छेदकर अर्धपुद्गलपरिवर्तनमात्र करके अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अप्रमत्तसंयतके कालका अनुपालन किया (१)। पीछे प्रमत्तसंयत हुआ (२)। पुनः वेदकसम्यक्त्वको उपशमाकर (३) सहस्रों प्रमत्त -अप्रमत्त परावर्तनोंको करके (४) उपशमश्रेणीके योग्य अप्रमत्तसंयत हो गया (५)। पुनः अपूर्वकरण (६) अनिवृत्तिकरण (७) सूक्ष्मसाम्पराय (८) उपशान्तकषाय (९), पुनः सूक्ष्मसाम्पराय (१०) अनिवृत्तिकरण (११) और पुनः अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती हो गया (१२)। पश्चात् नीचे

....

१ मु. प्रतौ मोदरिय इति पाठः। २ उत्कर्षेणार्धपुद्गलपरिवर्तो देशोनः। स.सि. १,८,

३ मु. प्रतौ मुवणमिय इति पाठः।

अद्धपोग्गलपरियट्टं परियट्टिदूण अपच्छिमे भवे दंसणत्तिगं खविय अपुव्वुवसामगो जादो (१३)। लद्धमंतरं। तदो अणियट्टी (१४) सुहुमो (१५) उवसंतकसाओ (१६) जादो। पुणो पडिणियत्तो सुहुमो (१७) अणियट्टी (१८) अपुव्वो (१९) अप्पमत्तो (२०) पमत्तो (२१) पुणो अप्पमत्तो (२२) अपुव्वखवगो (२३) अणियट्टी (२४) सुहुमो (२५) खीणकसाओ (२६) सजोगी (२७) अजोगी (२८)होदूण णिव्वुदो। एवमट्ठावीसेहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणियमद्धपोग्गलपरियट्टमपुव्वकरणस्सुक्कस्संतरं होदि। एवं तिण्हमुवसामगाणं। णवरि परिवाडिए छव्वीसं चउवीसं वावीसं अंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं तिण्हमुक्कस्संतरं होदि।

चदुण्हं खवग-अजोगिकेवलीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं[2] ॥१६॥

तं जहा-सत्तट्ठ जणा अट्ठुत्तरसदं वा अपुव्वकरणखवगा एक्कम्हि चेव समए सव्वे अणियट्टिखवगा जादा। एगसमयमंतरिदमपुव्वगुणट्ठाणं। विदियसमए सत्तट्ठ जणा अट्ठुत्तरसदं वा अप्पमत्ता अपुव्वकरणखवगा जादा। लद्धमंतरमेगसमओ। एवं

....

गिरकर अन्तरको प्राप्त हुआ और अर्धपुद्‌गलपरिवर्तनकाल प्रमाण परिवर्तन करके अन्तिमभवमें दर्शनमोहनीयकी तीनों प्रकृतियोंका क्षपण करके अपूर्वकरण उपशामक हुआ (१३)। इस प्रकार अन्तरकाल उपलब्ध होगया। पुनः अनिवृत्तिकरण (१४) सूक्ष्मसाम्परायिक (१५) और उपशान्तकषाय उपशामक होगया (१६)। पुनः लौटकर सूक्ष्मसाम्परायिक (१७) अनिवृत्तिकरण (१८) अपूर्वकरण (१९) अप्रमत्तसंयत (२०) प्रमत्तसंयत (२१) पुनः अप्रमत्तसंयत (२२) अपूर्वकरण क्षपक (२३) अनिवृत्तिकरण क्षपक (२४) सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपक (२५) क्षीणकषाय क्षपक (२६) सयोगिकेवली (२७) और अयोगिकेवली (२८) होकर निर्वाणको प्राप्त हुआ। इस प्रकार अट्ठाईस अन्तर्मुहूर्तोंसे कम अर्धपुद्‌गलपरिवर्तनकाल अपूर्वकरणका उत्कृष्ट अन्तर होता है। इसी प्रकारसे तीनों उपशामकोंका अन्तर जानना चाहिए। किन्तु विशेष बात यह है कि परिपाटीक्रमसे अनिवृत्तिकरण उपशामकके छब्बीस, सूक्ष्मसाम्पराय उपशामकके चौबीस और उपशान्तकषायके बाईस अन्तर्मुहूर्तोंसे कम अर्धपुद्‌गलपरिवर्तनकाल तीनों उपशामकोंका उत्कृष्ट अन्तर होता है।

चारों क्षपक और अयोगिकेवलीका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय होता है ॥१६॥

जैसे-सात आठ जन, अथवा अधिकसे अधिक एक सौ आठ अपूर्वकरण क्षपक एक ही समयमें सबके सब अनिवृत्तिक्षपक होगये। इस प्रकार एक समयके लिए अपूर्वकरण गुणस्थान अन्तरको प्राप्त होगया। द्वितीय समयमें सात आठ जन, अथवा एक सौ आठ अप्रमत्तसंयत एक साथ अपूर्वकरण क्षपक हुए। इस प्रकारसे अपूर्वकरण क्षपकका एक समय प्रमाण अन्तरकाल उपलब्ध होगया। इसी प्रकारसे शेष गुणस्थानोंका भी अन्तरकाल एक समय प्रमाण कहना चाहिए।

....

[1] चतुर्णां क्षपकाणामयोगकेवलिनां च नाना जीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः। स.सि. १,८

[2] मु. प्रतौ ऊणमद्ध इति पाठः।